Amazon Future Engineer

{ शिक्षकों }
के लिए
प्रशिक्षण मॉड्यूल

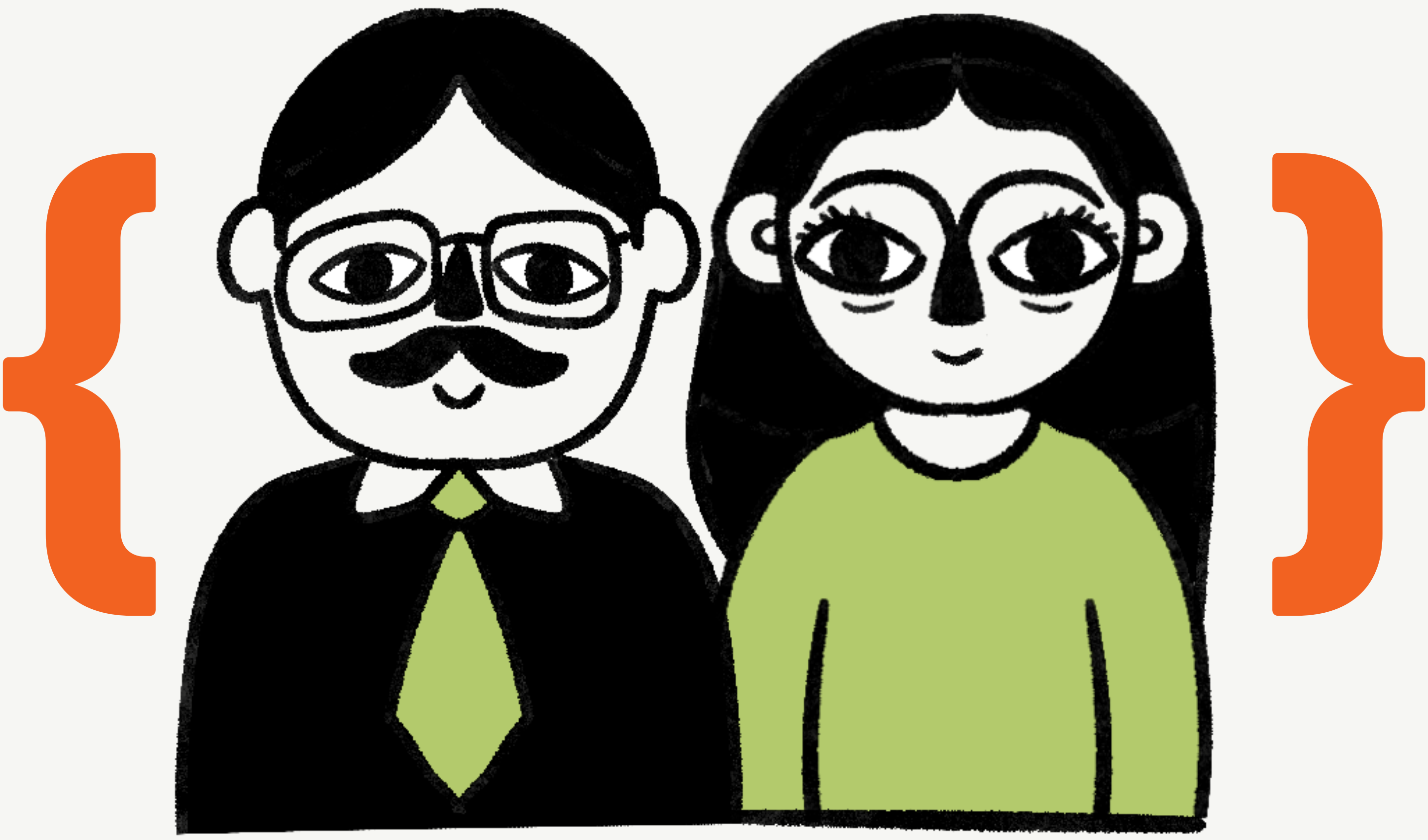

Amazon Future Engineer

{ शिक्षकों }
के लिए
प्रशिक्षण मॉड्यूल

{ विषयसूची }

01
मॉड्यूल की पृष्ठभूमि

02
प्रशिक्षण के उद्देश्य

2.1
समूह का आकार और अवधि

2.2
कार्यसूची

03

सत्र 1
प्रशिक्षण का संक्षिप्त परिचय

04

सत्र 2
बाल-सुरक्षा और बच्चों के साथ काम करने के मानदंडों का परिचय

05

सत्र 3
स्कूल को एक सुरक्षित और समावेशी स्थान बनाना

06

सत्र 4
'पॉक्सो' और 'जे. जे.' एक्ट का परिचय

07

सत्र 5
समापन और प्रश्नोत्तर

मॉड्यूल की { पृष्ठभूमि }

शिक्षक अमेज़न फ्यूचर इंजीनियर (एएफई) कार्यक्रम का एक अभिन्न अंग हैं। यह कार्यक्रम, शिक्षकों के साथ मिलकर, उनकी क्षमता वर्द्धन के लिए काम करता है। एएफई के कर्मचारियों और छात्रों के बीच होने वाले सभी प्रत्यक्ष संवादों में, शिक्षकों की भूमिका प्रमुख रहती है हैं। अमेज़न और उसके एएफई सहयोगी अपने सभी कार्यों में बच्चों की सुरक्षा के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध हैं। प्रत्येक बच्चे के लिए सुरक्षित वातावरण बनाने के प्रयासों में शिक्षकों की प्रमुख भूमिका है। अतः इस प्रशिक्षण का उद्देश्य 'बाल-सुरक्षा' और इस संदर्भ में उनकी ज़िम्मेदारियों को बेहतर तरीके से समझने में उनकी मदद करना है |

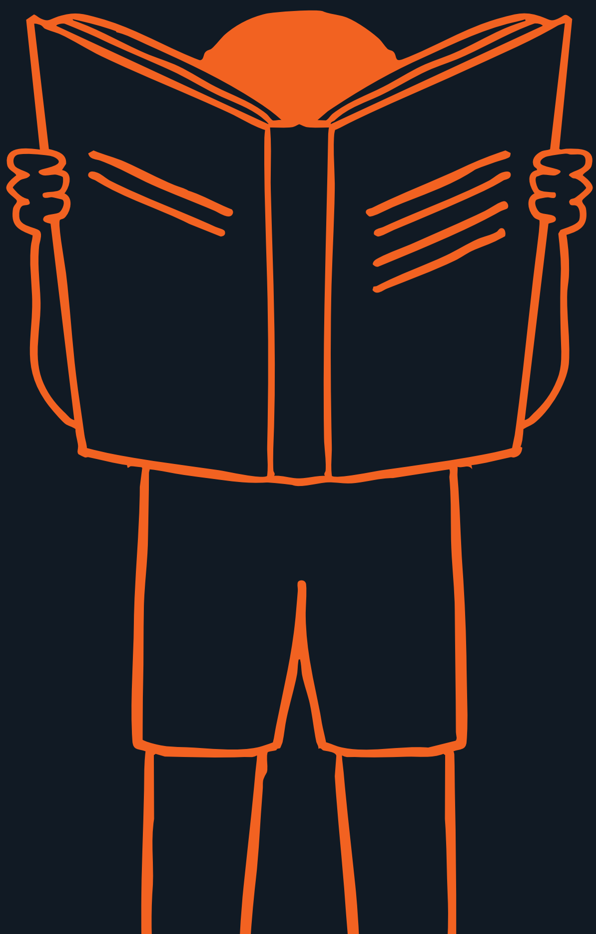

प्रशिक्षण के {उद्देश्य}

शिक्षकों को बाल सुरक्षा की अवधारणा और इसके महत्व से परिचित कराना।

शिक्षकों को उनकी भूमिका के बारे में बताना, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि स्कूल प्रत्येक बच्चे के लिए सुरक्षित और समावेशी स्थान हो।

शिक्षकों को 'यौन अपराधों से बच्चों का संरक्षण अधिनियम' (पॉक्सो), 2012 और किशोर न्याय (बच्चों की देखभाल और संरक्षण अधिनियम) /(जे. जे. एक्ट), 2015 के बारे में जानकारी देना।

[प्रशिक्षण का तरीका और अवधि]

*/ प्रशिक्षण का तरीका /

> बड़े समूहों के लिए वेबिनार शैली में ऑनलाइन प्रशिक्षण।

*/ समूह का आकार /

> इस मॉड्यूल को शिक्षाप्रद एवं प्रश्नोत्तर और वैचारिक सुझावों के ज़रिये सहभागिता बढ़ाने के उद्देश्य से बनाया गया है।

*/ अवधि /

> डेढ़ घंटा

* कार्यक्रम एजेंडा

सत्र	समयाविधि	विषय
सत्र 1	10 मिनट	प्रशिक्षण का संक्षिप्त परिचय
सत्र 2	20 मिनट	बाल सुरक्षा और बच्चों के साथ काम करने के मानदंडों का परिचय
सत्र 3	20 मिनट	स्कूल को सुरक्षित और समावेशी स्थान बनाना
सत्र 4	30 मिनट	'यौन अपराधों से बच्चों का संरक्षण अधिनियम' / पॉक्सो और (बच्चों की देखभाल और संरक्षण) अधिनियम / जे. जे. एक्ट की मूल बातों पर जागरूकता
सत्र 5	10 मिनट	प्रश्नोत्तर और समापन

{ सत्र 1 }

प्रशिक्षण का संक्षिप्त परिचय

(10 मिनट)

- सत्र की शुरुआत प्रतिभागियों का स्वागत और अपना परिचय देकर करें। इसके बाद प्रशिक्षण का उद्देश्य बताएं।
- इस बात को साझा करें कि बच्चे स्कूल में काफी समय बिताते हैं और स्कूल में उनकी भागीदारी, स्कूल के वातावरण और उनके अनुभव, इन सभी बातों का उनके जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है।
- प्रशिक्षण में बाल-सुरक्षा, सुरक्षित और समावेशी स्कूलों का महत्व, तथा सुरक्षा से संबंधी कानूनी प्रावधानों को शामिल किया गया है।
- सत्र में 50 से ज़्यादा प्रतिभागी हो सकते हैं, इसलिए हर एक को परिचय के लिए समय देना संभव नहीं है। प्रतिभागियों से अनुरोध है कि वे चैट-बॉक्स में अपना परिचय लिख दें।
- सत्र के बुनियादी नियम साझा करें। एक-दूसरे का सम्मान करने पर पर ज़ोर दें, लोगों को अपने विचार साझा करने का अवसर दें। प्रशिक्षण के दौरान बातचीत की गोपनीयता बनाए रखें। सत्रों के दौरान एक सुरक्षित माहौल बनाए रखने में में सभी की भूमिका है।
- प्रतिभागियों से उनकी अपेक्षाएँ पूछें। इन्हें चैट में सूचीबद्ध किया जा सकता है।

{ सत्र 2 }

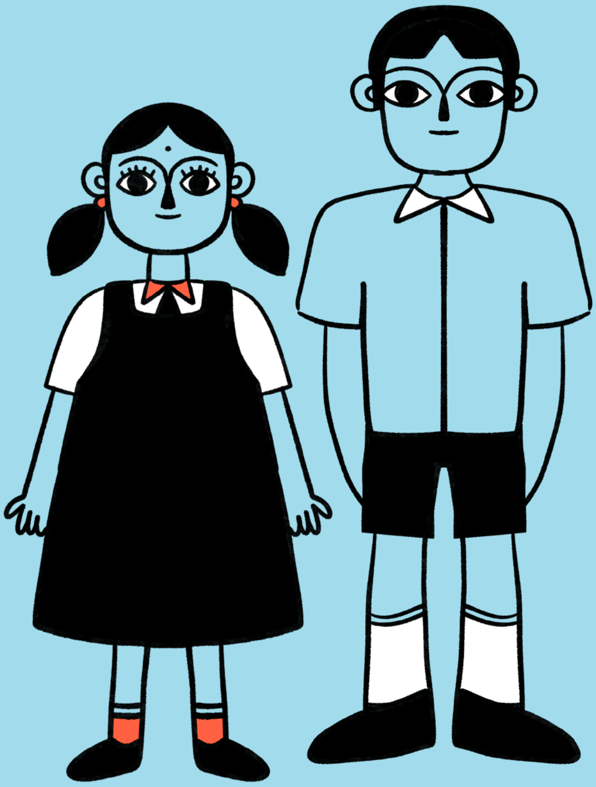

बाल-सुरक्षा और बच्चों के साथ काम करने के मानदंडों का परिचय

(10 mins)

- नीचे दी गई तालिका में उल्लिखित केस को प्रतिभागियों से साझा करें और उनसे नीचे दिए गए प्रश्न पूछें:

/ चर्चा करें />

< केस 1 >

सुमित को स्कूल में ज़्यादातर शिक्षक डाँटते हैं और अक्सर उसे कक्षा से बाहर खड़े रहने को कहते हैं, क्योंकि वह स्कूल में बहुत शरारत करता है, अक्सर कक्षा का ध्यान भटकाता है, और कभी अपना काम पूरा नहीं करता। उसके पिता अक्सर शराब पीते हैं और अक्सर उसे और उसकी माँ को पीटते हैं।

"क्या आपको लगता है कि ऐसी परिस्थितियों में किसी बच्चे/बच्चों को नुकसान हो सकता है?"

< केस 2 >

भारी बारिश हो रही है और स्कूल के बरामदे में पानी भर गया है। जैसे ही आखिरी घंटी बजी, बच्चे कक्षा से बाहर भागे और तभी कुछ बच्चों को बिजली के झटके लगे, क्योंकि वहाँ नीचे तक बिजली का एक नंगा तार लटका हुआ था।

“क्या आपको लगता है कि ऐसी परिस्थितियों में किसी बच्चे/बच्चों को नुकसान हो सकता है?”

< केस 3 >

रीना कक्षा 9 में है और उसने बताया कि एक शिक्षक ने उसे गलत तरीके से छुआ था। जाँच के बाद उक्त शिक्षक का तबादला कर दिया गया, लेकिन अन्य शिक्षक इससे आहत हुए। अब कई शिक्षक उससे ठीक से बात नहीं करते। रीना को इस बात का बहुत बुरा लगता है।

“क्या आपको लगता है कि ऐसी परिस्थितियों में किसी बच्चे/बच्चों को नुकसान हो सकता है?”

- जब प्रतिभागी अपने विचार साझा कर चुकें, तो निम्नलिखित के साथ सत्र का समापन करें:
  - > स्कूल में बच्चों को अनेक जोखिमों का सामना करना पड़ सकता है, जैसे कि वयस्कों का व्यवहार, डाटा की सुरक्षा, इत्यादि। यह नुकसान जानबूझकर या अनजाने में हो सकता है।
  - > इन जोखिमों को सक्रिय रूप से पहचानें और सुनिश्चित करें कि रोकने या कम करने के लिए पर्याप्त कदम उठाए जाएं; यह बाल-सुरक्षा का मूल है।

- "सेफ-गार्डिंग" शब्द के शाब्दिक अर्थ से बात-चीत की शुरुआत करें। यह दो शब्दों से मिलकर बना है, ("सेफ") सुरक्षित और ("गार्डिंग") रखना, जिसका अर्थ है, बाल-सुरक्षा सुनिश्चित करने के उपाय।
- सुरक्षा की अवधारणा और महत्व पर आगे चर्चा करने के लिए संलग्न प्रेजेंटेशन को संलग्नक 1 के रूप में उपयोग करें।
- अमेज़न और एएफई साझेदार इस तरह के जोखिम की संभावना को पहचानते हैं, और इसलिए, उनके पास स्कूल में आने वाले सभी कर्मचारियों और आगंतुकों के लिए एक आचार संहिता है, जिसे प्रत्येक स्कूल के साथ साझा किया जाता है।
- एएफई पार्टनर्स / सहयोगियों के पास एक 'शिकायत प्रक्रिया' भी है, जिसे स्कूल और छात्रों के सामने विधिवत रूप से प्रस्तुत किया जाएगा।
- अगर आपको लगता है कि किसी कर्मचारी के व्यवहार से आचार संहिता का उल्लंघन होता है या वह बच्चों के लिए अनुकूल नहीं है, तो आप संबंधित 'सुरक्षा अधिकारी' से इसकी शिकायत कर सकते हैं। बच्चों के पास आपसे या एएफई सुरक्षा अधिकारी से शिकायत करने का विकल्प भी होगा।

{ सत्र 3 }

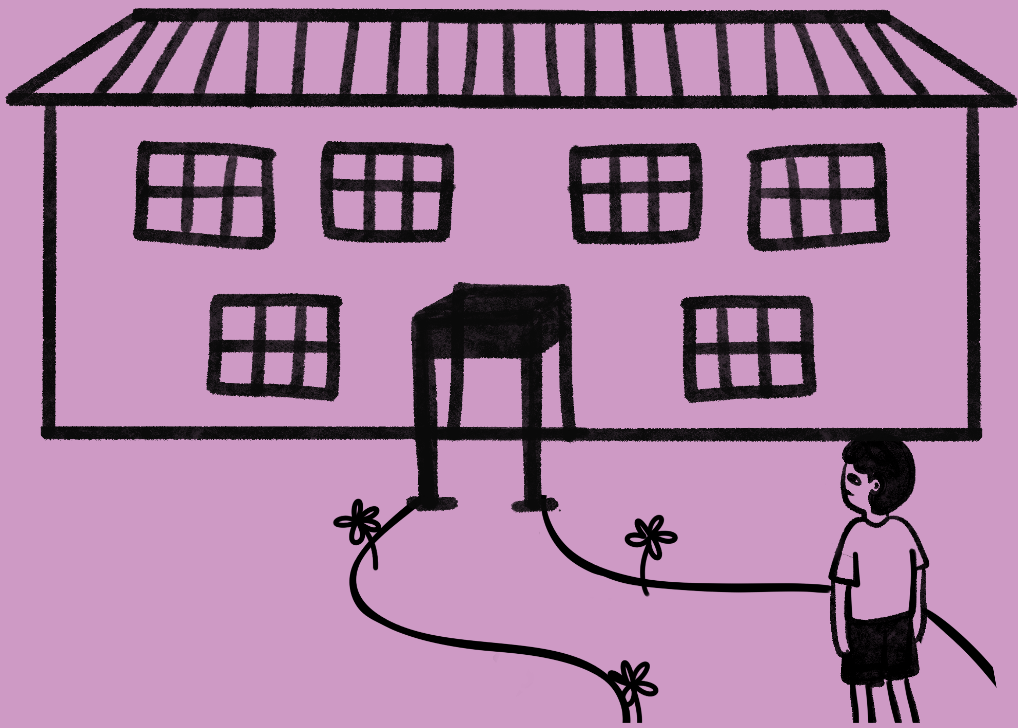

स्कूल को एक सुरक्षित और समावेशी स्थान बनाना (10 मिनट)

- शिक्षकों को बताएं कि सर्वोच्च न्यायालय ने अपने कई निर्णयों द्वारा यह स्पष्ट किया है कि स्कूल को बच्चों के लिए सुरक्षित और समावेशी स्थान बनाने के लिए शिक्षा विभाग को आवश्यक कार्रवाई करना है।
- भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय ने स्कूल सुरक्षा और संरक्षा पर दिशानिर्देश (2021) दिए हैं , जिनका उद्देश्य बच्चों की सुरक्षा में स्कूल प्रबंधन की जवाबदेही तय करना है।
- इस सत्र में, हम संक्षेप में व्यवहार संबंधी मानदंडों और अन्य कार्यों पर चर्चा करेंगे जो स्कूल में बच्चों के लिए सुरक्षित और समावेशी वातावरण बनाने में मदद कर सकें।
- बच्चों की सुरक्षा में शारीरिक, भावनात्मक, मनोवैज्ञानिक और यौन सुरक्षा के आयाम शामिल हैं।
- शारीरिक सुरक्षा पर संक्षेप में चर्चा कीजिए और इस बात पर ज़ोर दीजिए कि स्कूलों में बुनियादी ढाँचे की स्थिति, कक्षा उपकरण, खेल उपकरण, अग्नि सुरक्षा, आपदा नियोजन और चोट व क्षति से सुरक्षा, शारीरिक सुरक्षा के महत्वपूर्ण अंग हैं। शारीरिक जोखिम के समय-समय पर आकलन की आवश्यकता पर ज़ोर दीजिए, जैसे कि भवन, बिजली के तारों, रंग-रोगन आदि का आकलन।
- इसके अलावा, शारीरिक दंड, छात्रों के बीच झगड़े आदि के कारण शारीरिक खतरे की संभावना भी होती है।
- प्रश्नों को शिक्षकों द्वारा अपना मत व्यक्त करने के लिए इस्तेमाल करें। शिक्षकों को उत्तर देने दें। आगे की चर्चा के लिए स्पष्टीकरण का उपयोग करें।

* मत-आधारित प्रश्न:

प्रश्न	विकल्प	स्पष्टीकरण
शिक्षक भी इंसान हैं और उनमें पूर्वाग्रह होते ही हैं। आपके विचार से शिक्षकों के पूर्वाग्रह छात्रों के अनुभव को किस हद तक प्रभावित करते हैं?	**1. उच्च प्रभाव** **2. मध्यम प्रभाव** **3. कोई प्रभाव नहीं या न्यूनतम प्रभाव**	शिक्षकों के पूर्वाग्रह बच्चों के सीखने के अनुभव पर गहरा प्रभाव डालते हैं। शिक्षक का पूर्वाग्रह बच्चे को बहिष्कृत, भेदभाव का शिकार या उपेक्षित महसूस करा सकता है। शिक्षक का व्यवहार दूसरे बच्चों के व्यवहार को भी प्रभावित करता है।
आपके अनुसार, बड़ों के डर और उनकी डांट का उन बच्चों पर कितना असर होता है जो नियमों और मानदंडों का पालन नहीं करते। क्या डर और डांट उन्हें नियमों का पालन करने और अच्छी आदतें विकसित करने में मदद करते हैं?	**1. वयस्कों का डर और डांट-फटकार काफी हद तक नियमों के पालन और अच्छी आदतों को बढ़ावा देती है।** **2. वयस्कों का डर और डांट कभी-कभी अनुपालन और अच्छी आदतों को सक्षम बनाती है।** **3. बड़ों के डर और डांट-फटकार से बच्चों के व्यवहार में तुरंत बदलाव तो दिख सकता है, लेकिन ये परिवर्तन लंबे समय तक नहीं टिकते हैं, और उनमें अच्छी आदतें विकसित नहीं होतीं।**	डर किसी व्यक्ति में कुछ समय के लिए तो बदलाव ला सकता है, लेकिन यह उसे दीर्घकालिक रूप से नहीं बदलता। जिन बच्चों को डर से अनुशासित किया जाता है, उनमें आत्म-सम्मान कम होने, जीवन में जोखिम कम लेने और आक्रामक व्यवहार प्रदर्शित करने की संभावना अधिक होती है। यह भी बताएँ कि भारत में वयस्कों और बच्चों के बीच संबंध उपदेश या हिदायत देने वाले होते हैं और बच्चों से अपेक्षा की जाती है कि वे बड़ों की आज्ञा का पालन करें। यह समझना ज़रूरी है कि बच्चे भी व्यक्ति हैं और शिक्षा उन्हें केवल बड़ों का अनुसरण करने के बजाय अपनी राय और निर्णय लेने में सक्षम बनानी चाहिए।

प्रश्न	विकल्प	स्पष्टीकरण
बच्चों की विभिन्न गतिविधियों के दौरान, शिक्षक और स्कूल के कर्मचारी, निजी फ़ोन से उनकी तस्वीरें लेते हैं। क्या ये तस्वीरें बच्चों के लिए जोख़िम पैदा करती हैं?	1. **यदि तस्वीरों को सुरक्षित तरीके से न संभाला जाए तो वे भारी जोखिम पैदा कर सकती हैं।** 2. **यदि तस्वीरों को सुरक्षित तरीके से न संभाला जाए तो वे जोखिम पैदा कर सकती हैं।** 3. **शिक्षक ज़िम्मेदार वयस्क हैं और तस्वीरें उनके पास सुरक्षित हैं।**	तस्वीरें संवेदनशील निजी दस्तावेज़ होती हैं। तस्वीरों के साथ छेड़छाड़ या सेक्सटिंग वगैरह के लिए प्रोफ़ाइल इमेज के तौर पर इस्तेमाल होने का ख़तरा बना रहता है। एआई (कृत्रिम बुद्धिमत्ता) के इस दौर में यह ख़तरा और भी ज़्यादा है, जहाँ ऐप से तस्वीरों को अश्लील बना सकते हैं। 'न्यूडिफाई' और इसके जैसी तकनीकें, किसी की सामान्य सी फोटो से, वास्तविक लगने वाली, अनुचित और अश्लील तस्वीरें बहुत आसानी से बना देती हैं। इन्हें इस्तेमाल करने के लिए किसी तकनीकी कौशल की आवश्यकता भी नही होती और जिनकी फोटो है उनकी सहमति लिए बिना भी यह किया जा सकता है। यह न केवल उनकी निजता के अधिकार का उल्लंघन है, बल्कि उनके शरीर की स्वायत्तता के अधिकार का भी गंभीर हनन है।
सोहन बहुत होशियार है, लेकिन उसका छोटा भाई मोहन पढ़ाई में अच्छा नहीं है। शिक्षक दोनों की तुलना करते रहते हैं और उसे अपने भाई जैसा बनने के लिए कहते हैं।	1. **ऐसी तुलना स्वास्थ्यप्रद है, क्योंकि इससे प्रदर्शन में काफी सुधार हो सकता है।** 2. **ऐसी तुलना ठीक है क्योंकि इससे मोहन को अनुकरणीय आदर्श मिलता है।** 3. **ऐसी तुलना हानिकारक हो सकती है क्योंकि इससे मोहन का आत्म-सम्मान और आत्मविश्वास कम हो सकता है।**	प्रत्येक बच्चा अद्वितीय होता है और उसका विकास उसके व्यक्तिगत लक्ष्यों के अनुरूप होता है। उन्हें किसी और की तरह बनने का सुझाव देने के बजाय, उनकी व्यक्तिगत खूबियों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। स्कूल का अनुभव बच्चों को सक्षम बनाने वाला होना चाहिए चाहिए और आत्मविश्वास, आत्म-सम्मान और आत्म-प्रभावकारिता में सुधार लाने वाला होना चाहिए।

प्रश्न	विकल्प	स्पष्टीकरण
रानी, जो महाराष्ट्र के एक सुदूर गाँव में रहने वाली कक्षा 10वीं की एक छात्रा है, ने स्कूल आना बंद कर दिया है। पता करने पर उसकी एक सहेली ने बताया कि उसकी शादी तय हो गई है। शिक्षिक ने उसके माता-पिता से बात करने की कोशिश की, लेकिन वे बात करने के लिए तैयार नहीं हैं।	**1. किसी छात्रा के बाल विवाह को रोकने में शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है।** **2. कभी-कभी लड़कियों के बाल विवाह को रोकने में शिक्षकों की भूमिका हो सकती है।** **3. किसी छात्रा के बाल विवाह को रोकने में शिक्षकों के लिए कोई भूमिका निभाना कठिन है।**	शिक्षकों के लिए अपने स्कूल या कक्षा के छात्रों के बाल विवाह को रोकना आसान नहीं होता। हालाँकि, उनकी भूमिका बच्चे के लिए विश्वास परिवर्तनकारी हो सकती है और उसका भविष्य हमेशा के लिए बदल सकती है। ऐसे कई तरीके हैं जिनसे आप उक्त लड़की की मदद कर सकते हैं। > **अभिभावकों के साथ या समुदाय या स्कूल प्रबंधन समिति के माध्यम से सीधे हस्तक्षेप करें।** > **अपने जिले की बाल कल्याण समिति को सूचित करें, जो आपराधिक कार्रवाई के बजाय सक्रिय हस्तक्षेप करेगी।** > **क्षेत्र के बाल विवाह निषेध अधिकारी को सूचित करें, जिन्हें माता-पिता के साथ सक्रिय रूप से हस्तक्षेप करने का अधिकार दिया गया है।** निरंतर संवाद के साथ, लड़कियों के जीवन कौशल और क्षमता संवर्द्धन से लड़कियां अपने जीवन के निर्णयों के बारे में बातचीत करने एवं निर्णय लेने के लिए सशक्त हो सकती हैं।

प्रश्न	विकल्प	स्पष्टीकरण
हरि का 6 साल का भाई जो उसी स्कूल में पढ़ता है, एक दिन रोता हुआ आया। उसे रोता हुआ देख कर गणित के शिक्षक ने उसे गोद में बिठा लिया और दिलासा दी।	**1. गोद में लेने जैसा शारीरिक स्पर्श भावनात्मक समर्थन प्रदान करता है और यह एक अनुशंसित व्यवहार है।** **2. शारीरिक स्पर्श से बचना चाहिए क्योंकि कई बच्चों को यह पसंद नहीं आता।** **3. शारीरिक स्पर्श को कम से कम किया जाना चाहिए क्योंकि इससे बच्चों के प्रति दुर्व्यवहार का खतरा रहता है।**	शिक्षक-बच्चे के रिश्ते में विश्वास एक अहम हिस्सा है। हालाँकि, शारीरिक निकटता और स्पर्श के बीच सीमाओं का अभाव दुर्व्यवहार करने वालों या गुप्त उद्देश्यों वाले व्यक्तियों के लिए एक अनुकूल वातावरण पैदा कर सकता है। बच्चे अक्सर इस तरह के व्यवहार को पहचानने या उसकी रिपोर्ट करने में असमर्थ होते हैं और उनके प्रति आगे भी दुर्व्यवहार का खतरा बढ़ सकता है।

ये केवल कुछ उदाहरण हैं, जहाँ शिक्षकों का व्यवहार और आचरण बच्चों के जीवन पर गहरा प्रभाव डाल सकता है। जिस तरह स्कूल के अंदर के लोगों से नुकसान का खतरा बना रहता है, उसी तरह स्कूल आने जाने वालों से भी खतरा बना रहता है।

{ सत्र 4 }

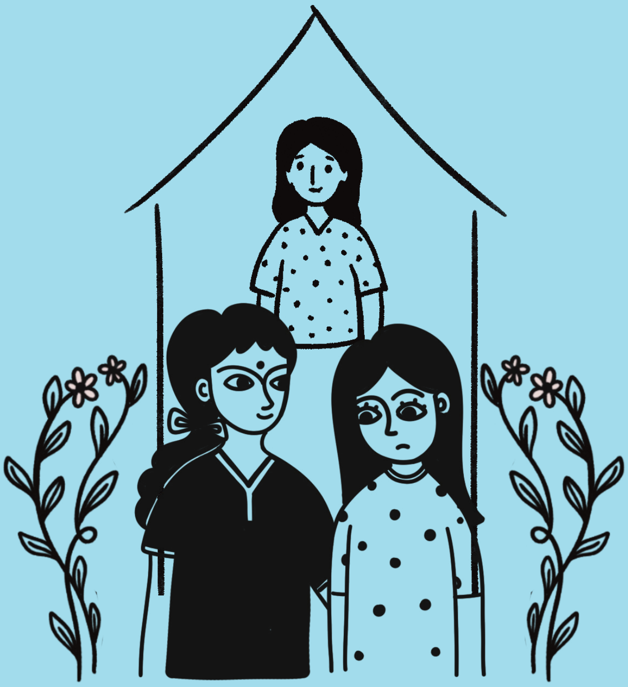

‘पॉक्सो’ और ‘जे. जे. एक्ट’ का परिचय

(10 मिनट)

सत्र की शुरुआत इस बात से करें कि बच्चों की सुरक्षा केवल स्कूलों की ज़िम्मेदारी नहीं है; यह एक कानूनी दायित्व भी है।

यौन अपराधों से बच्चों का संरक्षण अधिनियम (पॉक्सो), 2012 और किशोर न्याय (बच्चों की देखभाल और संरक्षण अधिनियम) /(जे. जे. एक्ट), 2015 का परिचय दें, और प्रस्तुत प्रेजेंटेशन के माध्यम से दोनों अधिनियमों के प्रासंगिक प्रावधानों को साझा करें।

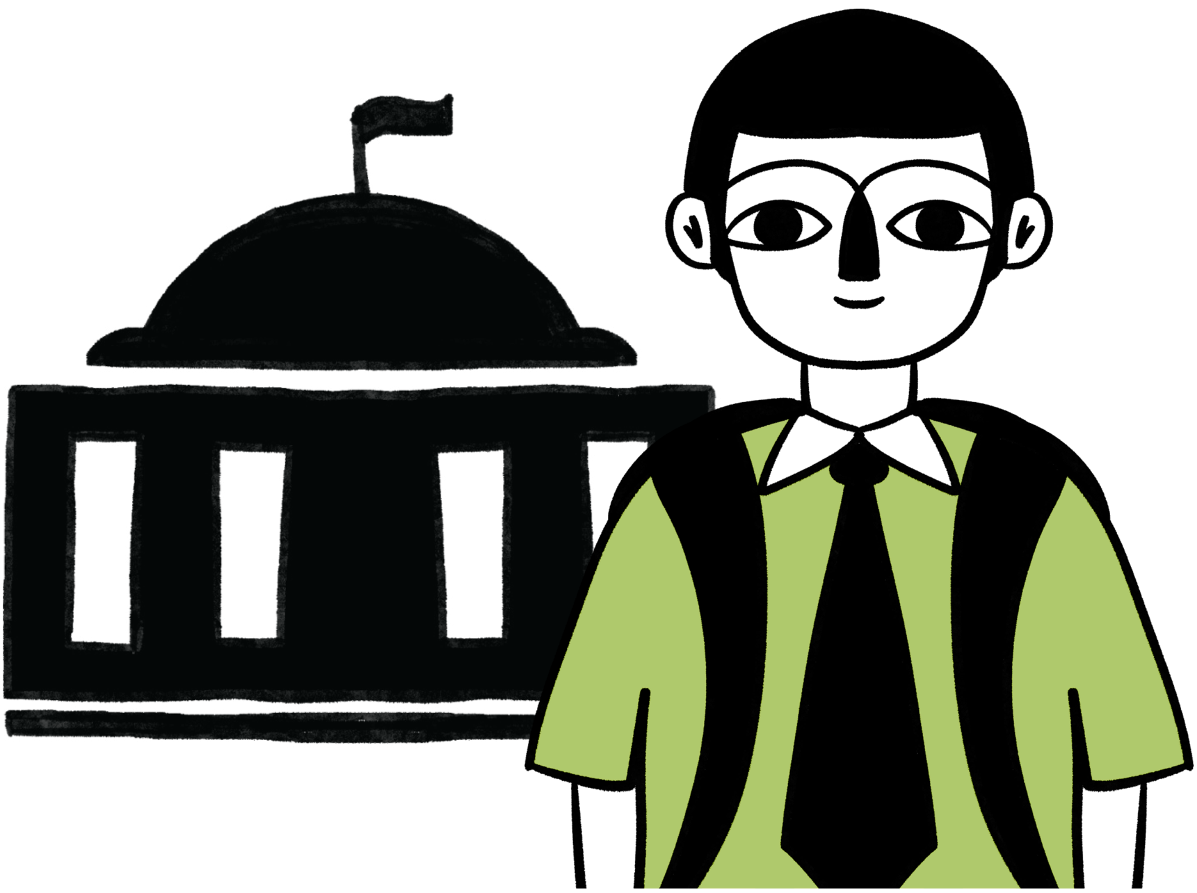

{ सत्र 5 }

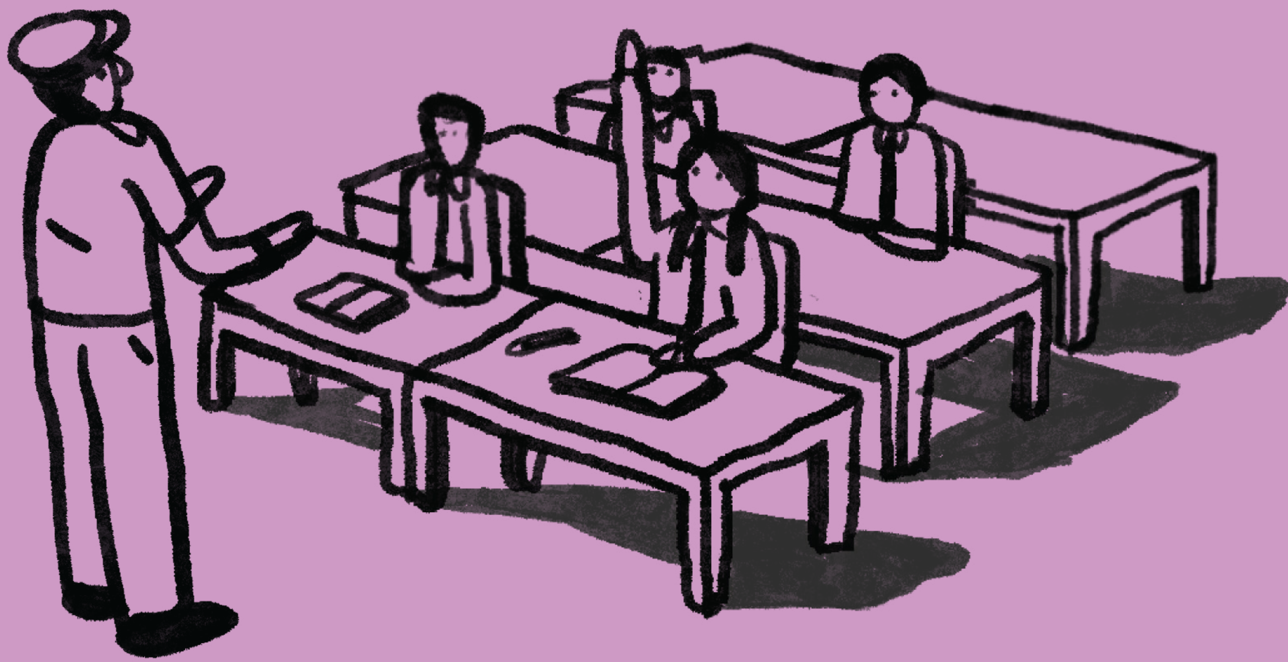

समापन और प्रश्नोत्तर (10 मिनट)

शंकाओं के समाधान के लिए 10 मिनट का समय दें तथा बच्चों के जीवन और कल्याण में शिक्षकों की भूमिका की प्रशंसा करते हुए प्रशिक्षण का समापन करें।